Vol. 7, Issue 4, January 2018 ISSN 2249-894X

REVIEW OF RESEARCH

An International Multidisciplinary Peer Reviewed & Refereed Journal

Impact Factor: 5.2331

UGC Approved Journal No. 48514

Chief Editors
Dr. Ashok Yakkaldevi
Ecaterina Patrascu
Kamani Perera

Associate Editors
Dr. T. Manichander
Sanjeev Kumar Mishra

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

मध्यप्रदेश में भील जनजाती की समाजिक स्थिति

श्रीमती अंजना दुबे
रिसर्च स्कालर, हिन्दी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर म.प्र.

प्रस्तावना–

पश्चिमी मध्यप्रदेश वस्तुतः भीलांचल के रूप मे अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए हुए है । प्रदेश के मानचित्र में खरगोन, बडवानी, धार झाबुआ, और रतलाम जिले भील जनजातीय क्षेत्र के रूप में अस्तित्व में है। राजस्थान और गुजरात प्रदेश भी भील देश के नाम से जाने जाते है। यदि इस

अध्ययन के अतीत की ओर झांका जाय तो ज्ञात होगा कि संस्कारवादिता के रूप में बहुचर्चित रही है । भील सरदारों भील राजाओं और राज्य प्रमुख के रूप में अपनी वीरता के समय काल और परिस्थतियों के वंशीभूत इन्ही भीलों में जो श्रेष्ठी वर्ग के रूप में अपनें समुदाय में प्रमुख बने, उन्होनें अपने को राजपूत श्रेणी में लाकर खडा कर दिया। इसी परम्परा में सम्बन्धों के एक अलग सबंधों का प्रतिरूप जातिगत आधार पर निर्मित हुआ और इन्होने अपनें को भीलो से अलग कर लिया । इसी जातीय परम्पराओं और क्रियाओं में उपजातियों निर्मित हुई।

बारहबी शताब्दी से अठारवी शताब्दी के मध्य ये समुदाय राजस्थान और गुजरात से क्षेत्रीय भागों में भी फैले । जीवन जीने के संसाधनों और सुरक्षा की दृष्टि से वे सुविधाजनक जहॉ भी स्थिर हुए उसे ही अपना कार्य क्षेत्र भी बना लिया । इन्ही भीलों में अपनें स्तर से उठ जाने और समुदायों में बट जाने के कारण एक दूसरे से अलग होने लगे । यही से अपनी पहचान के रूप में भिलाला, ठाकरिया और दरबारिया आज भी अपनें को ठाकुर या राजपूत कहलवानें मे गौरव का अनुभव करते है । इसी श्रेष्ठी वर्ग ने गावों में पटेल की नियुक्तियॉ भी की । परिणाम स्वरूप वे अपनें को संरक्षक के रूप में देखनें लगे और पटेल कहवाने में गौरव का अनुभव करनें लगे ।

कुजी शब्द – जनजाति का विवरण, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, विवाह पद्वती, भीलो के देवी देवता

मध्यप्रदेश मे भारतीय जनजातीय का विवरण

जनजाति अर्थात जनता की जाति का वाक्य से तो प्रत्येक जन ही जनजाति है किन्तु यहॉ वे जनजाति है जो आर्यो के आगमन के पश्चात अनेंक समुहों को जगलों में रखनें के लिए बाध्य हुए । आदिवासी अर्थात प्राचीन मूल निवासी यदि आर्य भारत में आए तो मूल निवासी ही आदिवासी कहला सकतें है। वनवासी शब्द जनजाति उन्हे ही मानने का संकल्प लिए हुए है जो वनों में ही रहते है जो जनजाति समूह कुछ या कई पीढियों पूर्व वनों को छोड चुके है वे वनवासी नही हो सकते ।

मध्यप्रदेश में जनजातियों की संख्या बहुतायत में है । ये जनजातियॉ मध्यप्रदेश के अनेक भागों मालवा, बघेलखण्ड, बुदेलखण्ड एवं अनेंक भागों में पायी जाती है छतीसगढ महाराष्ट्र राजस्थान आदि की सीमाओ से जुडे होने के कारण इन प्रदेशो मे कुछ जनजातियॉ सीमान्त क्षेत्रों में है

मध्यप्रदेश जो जनजाति निवास कर रही है उसका विवरण निम्नानुसार है

कमांक	जनजाति का नाम	उपसमूह (उपजनजाति)	जिले
1.	भील	बरेला भिलाला पटेरिया	धार, झाबुआ खण्डा एवं बुरहानपुर
2.	बैगा	बिझवार,नरेटिया नाहर राय मैना एवं कथ मैना	मण्डला एवं बालाघाट
3.	गौड	प्रधान, अगरिया ओझा नगरची सोल्हॉस	मध्यप्रदेश के सभी जिलों नर्मदा के दानों किनारों विन्ध्य सतपुडा क्षेत्र
4.	भारिया	भूरिया मुइनहार पाण्डों	छिन्दवाड जबलपुर
5.	कोरकू	मवेसिरूया नाहला बावरी वोदोयन	खण्डवा, बुरहानपुर होशंगाबाद बैतूल छिन्दवाडा
6.	कोल	श्रेहिया राथेल	रीवा संतका सीधी, शहडोल छिदवाडा
7.	हल्वा	हल्वी, वास्तरिया एवं छत्तीसगढिया	बालाघाट
8.	मारिया	अवूलभारिया दण्डि भी भारिया मेटा कोयटूर	पन्ना शहडोल एवं छिन्दवाडा
9.	सहारिया		गुना शिवपुरी मुरैना, ग्वालियर विदिशा एवं राजगढ

मध्यग्रदेश तीन जिलों धार, झाबुआ और मंडला में 50% से अधिक जनजातीय संख्या है। 30 से 50: तक जनसंख्या वाले जनजाति के जिलों में क्रमश : खरगोन, छिन्दवाडा, सिवनी,सीधी एवं शहडोल सम्मिलित है

भीली जनजीवन की सामाजिक स्थिति–

वनांचल मे रहने के कारण आदिवासी समाज, रियासत में बहुसंख्याक होने के बाद भी अलग थलग और उपेक्षित रहा । पहाडियों पर रहने वाले आदिवासी दुस्साहसी, बर्बर और आक्रमणकारी तथा मैदान में रहने वाले आदिवासी दुस्साहसी, बर्बर औश्र आक्रमणकारी तथा मैदानी में रहने वाले अपेक्षाकृत सरल, सभ्य और ईमानदारी से जीवन यापन करनें वाले माने जाते रहे ।

सर पर फटी पुरानी पगडी, शरीर पर सफेद मोदी चादर, कमर में लंगोटी, नंगे पैर, हाथ में तीर कामठी..... यही है एक भील आदिवासी पुरूष की प्रतिमा । मैली कुचेली लुगडी (छोटी साडी) घेरदार, लहंगा कथीर (सफेद चादी जैसी धातु) के आभूषण,मिटटी के बर्तन, सर पे उठाए ..... यही है एक आदिवासी महिला की पहचान । हरे काले लाल रंग के लुगडे, पोलके –घोघरे महिलाओं मे था काले रंग का कब्ज सिर पर सितारें जडे होते हैं या धागे की कढाई होती है, आदिवासियों का प्रिय रंग एवं परिधान रहा है।

मक्का मुख्य खाद्य पदार्थ है, अभावों में राबडी (मक्का के आटे को पानी में घोल कर उबालना) बनाकर पीना ही असली भोजन होता है शराब (मछुया) ताडी और नीरा इनके मुख्य पेय है । जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई भी रस्म शराब के बिना पूरी नही होती है नशे में डूबे मांदल की थाप पर थिरकतें गाते आदिवासियों के न जाने कितने दर्द अपने आस–पास से बेखबर होते रहते है ।

बांसुरी बजाना, लोक गीत गाने और लोक नृत्य करने का शौक इनकों प्रकृति प्रदत्त रहा है। इसी में भाव विभोर होकर अभावो को भूल जाना इनकी विशेषता रही है । रात–रात भर दूरस्थ स्थानों से सन्नाटे में उठतें मांदल ढोल और बासुरी के मिले जुले स्वर ..... सभी को अपनी और खीचते, लुभातें और इनकी दिन भर की थकान को हरते है।

विवाह पद्धति

आदिम जाति में प्राप्त और प्रचलित सभी वैवाहिक पद्वतियां इनमें पाई जाती है। कन्या का जन्म शुभ माना जाता है । शादी के समय कन्या मूल्य दापा लेना इनकी लोकप्रथा है। सगाई से लेकर वधू की विदाई तक विवाह की लोक पारम्परिक रस्में पूरी की जाती है । बारात को जान कहते है, जिनमें स्त्री – पुरूष दोनो ही भाग लेते है। घोडे के अभाव को दूर करने के लिए वर और वधू को कंधे पर बिठाया जाता है ।

आर्थिक स्थिति

भील अज्ञानी अंधविश्वासी एवं पिछले होने के कारण शोषण का शिकार रहें । वांचल मे रहने के कारण बहुसंख्यक होने के बाद भी उपेक्षित रहें है । कभी आसामी तो कभी चाकर बनकर और कभी अपनें ही परिवार के विभाजन

से छोटे हुए खेतों में हाड–तोड मेहनत कर प्रकृति की नाराजगी पाकर । कभी – कभी मेहनत कर प्रकृति की नाराजगी पाकर । कभी –कभी नही हर बार वह अपने खेतों से विकास करसकनें योग्य द्रव्य भी प्राप्त नही कर पाया ।

कस्बों के साप्ताहिक हाट बाजार आदिवासी तथा गौर आदिवासियों के बीच सौहाद्रपूर्ण संबंधों की भूमिका निर्वाह करतें है। यह मनोंरजन ज्ञानवर्धक एवं खरीद फरोख्त के लिए महत्वपूर्ण संबंधों की भूमिका निर्वाह करतें है। यह मनोंरंजन ज्ञानवर्धक एवं खरीद फरोख्त के लिए महत्वपूर्ण है समय– समय पर कुछ धार्मिक स्थलों या नदियों के किनारें पर मेंलों का आयोजन भी इस क्षेत्र में होता है। भील जनजाति की आर्थिक व्यवस्थाएं वनोपज, कृषि उपज, अकुशल श्रम से होती हुई वर्तमान में कुशल श्रम तक पहुंच चुकी है।

भील समाज की धार्मिक मान्यताएं :

झाबुआ जिले के आदिवासी धर्म से ओत प्रोत है । जैसा कि एक आम अफवाह है कि झाबुआ जिले का आदिवासी खूंखार है चलती ट्रेन को रोकना, बस व ट्रक के लूट लेना राहगिरों को मारपीट कर लूट लेना, इनके लिए मामूल कार्य है, इतना होने के बावजूद भी वे धार्मिक है क्योंकि वे यह सब कृत्य अपनें देवताओं के नाम से करते है जो माल असबाब उन्हे चोरी के यप में मिलते है इनमे अधिकाश भाग देवी के भोग के रूप में चढा देते है ।

आदि समाज के प्राचीन परम्पराओं तथा समाजिक और धार्मिक विश्वासों के प्रति गही आस्था है। इन के तीज त्यौहार व देवी–देवताओं हिन्दुओ से मिलते जुलतें है। इनकी उपासना रीति हिन्दुओं से बहुत अलग नही, किन्तु हिन्दुओं के कुछ नारकीय (असूरी) देवी देवताओं को वे बलिदान द्वारा संतुष्ट कर अपने सुखी जीवन की मांग करते है।

कई ऐसे विश्वास प्रचलित है जो आज भी विज्ञान सम्मत प्रेतीत होते हैं । जैसे कि यहां प्रचलित वन देवता का विश्वास आधुनिक वृक्षारोपण एवं प्रदूषण के निवारण को पूरी वैज्ञानिकता के साथ पूरा करता है। पत्थरों पर उकेरे गए देवी देवताओं के आकार और स्थापित छोटे–छोटे लघु शिखरी मंदिर भी इनकी लोककला के अदभुत नमूने है।

इनके अलावा इनके पूर्वज उल्लेखनीय कार्य कर गए हो, उनका भी पूजन किया जाता है। विस्तुत गाथांए गीतों के माध्यम से गाई जाती है। इसमें बाबा वान्याजी, बाबा मकना, बाबा मईडा, बाबा खोंका, कुसुम्बर आदि की स्मृति में मेले भी लगते है।

धार्मिक अवसर पर कही जाने वाली कथा में धर्मी राजा का वृतांत अवश्य आता है ये शेर, नाग,अजगर,को भी पूजते हैं।

अजगर को बाबा देव का पाटला (सिंहासन) मानते है बहुत सी अन्य मिथ्या परम्पराओं के कारण आदिवासियों मे बहुत सी कुप्रथाएं भी है। बडवे भौपे गांवों में भूत – प्रेतों, का अलख जगाते तथा टोने –टोटके रहतें है। वे आदिवासी के हर रोग का इलाज करतें है।

भीलो के देवी देवता

1.	सोहन माता	मवेशियों की सुरक्षा की देवी हैं
2.	चोरण माता	चौरी डकैती में सफलता दिलाने वाली माता है ।
3.	जसमा माता	यह धनधान्य की विशिष्ट देवी है। इनकी पूजा धनतेरस के दिन
4.	मालिया बाबा देव	कृषि बागवानी व वनों की रक्षा करनें वाले देव है जिना का पूजन श्रावण माह में किया जाता है।
5.	क्षेत्रपाल	गाव के रक्षक देवता है, जिसकी पूजा खरीफ की फसल काटने पर होती है।
6.	बोलकिया देव	यह देव अक्सर दुर्गम राहों, खतरनाक मोडो तथा बडे घाटों पर विराजमान रहतें है।
7.	भेरू देव	भेरू के नामों से जाने जाते है जैसे – जजारिया भेरू, मसानिया भेरू, बंदी छोड भेरू आदि । भेरू भक्ति के प्रतीत माने जाते है।
8.	गातला	पूर्वजों में कोई शूरवीर अपनें वंश की रक्षा मे मारा गया हो तो उसका गातला (मूर्ति) बनाकर उसे सूरमा की उपाधि से अलंकृत कर पूजते है।

भीलो के लोक गीत

आदिवासियों की कला परम्पराएं आदिम संस्कृति की चेतना की संवाहक है। पिथौरा चित्रकला भारत भवन के प्रवेश द्वारा देखकर श्रीमती इंदिरा गांधी सुखद आश्चर्य से ठिठक गई थी । प्रधानमत्री द्वारा देश विदेशों के ख्यात

शिल्पियों की अनमोल कला कृतियों के बीच झाबुआ जिले के इस पंरम्परागत शिल्प को पहला पुरस्कार दिया गया, जो पत्थर पहाडो व अशिक्षा के बीच अंकुरिता कला परम्पर का गौरव था।

पिथौरा चित्र कला में मुख्यतः लकडी लोहा, कपडा व मिटटी के माध्यम बनाकर शिल्प निर्माण किया जाता है। वृक्षों की जातियों से निर्मित प्राकृति क गेरू, मेंहदी जैसे परम्परागत व प्राकृतिक रंगो का उपयोंग यहां के कलाकार अपनी कला में करतें है। कला में परम्परा की मिठास घोलकर जब कृति तैयार हो जाती है, वह कठीन ग्रामीण जीवन में खुशियों के छीटे दे जाती है। गर्व से जब ये पिथौरा चित्रकला को रंगो भरा आयाम देते है, तब लोककला का इंद्र धनुष अपनें आप दपदपातें लगता है।

भील समाज में शादियों के रीति रिवाज भी दिलचस्प है। शादी के लिए तय दिन के पहले गीत गाती महिलाए लडकी के गहन पहनानें बाजार में लेकर आती है इस पेहरावा या घडावा ले जाना कहतें है। इसी बीच अलर वह पक्ष की महिलाएं भी उसी दिन, उसी समय बाजार में आ जाती है तों फिर दोनों पक्ष की महिलाएं गीतों के माध्यम से व्यंगात्मक बाण छोडती है।

बेवणी घेर ना रूप्या होय तो मारी
बेन ने वोवड– वोवड केजे वो
तारा घेर ना रूपया नी होय तो मारी
बने ने वोवड नथी केजे वो ।

अर्थात दुल्हन पक्ष वाली महिलाएं इस गीत में कहती है कि अलर तुम्हारें घर में रूपयें हो तो हमारी बेन को लाडी कहना, नही तो हमारी लाडी मत कहना । फिर वह वृक्ष की महिलाए भी खंडन करती हुई इसका जवाब गीतों के माध्यम से देती है।

देवी देवओं एवं पूर्वजों को शादी का निमंत्रण दिया जाता है। देस दोहरा नौतरना कहतें है। इस सभी के नाम के चौकार आकार में दीवार पर हल्दी के टीके लगाए जातें है। हर नाम पर शराब की धार और टीके लगाए जाते है। यह काम तडवी द्वारा होता है। यहां गाए जाने वाले गीतों में एक गीत की बानगी देखियें

जावों ने जावों रे भभरा नौतरिया
जमी माता ने नौतरी लावों
जावों ने जावों रे भमरा नौतरिया
चांद सूरज ने नौतरी लावों ।

इस प्रकार भंवरें को गीत गाकर महिलाएं कहती है कि जाओ और जमीन माता, चंदा सूरज एवं अन्य सभी देवी देवताओं और पूर्वजों को निमंत्रण दे आओं

उपसंहार

आदिवासियों की संस्कृति एवं सभ्यता अत्यंत सुगठित एवं पुरातन है। इस अंचल के ऐतिहासिक झरोखें से लोक संस्कृति ..... कला परम्पराओं के अनेक बिंब झिलमिलातें है सामाजिक और पारिवारिक जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रथाएं और संस्कारों की पुष्ट जमीन इन्हें अपनी जाति से अलग नही जाने देती । अभाव और गरीबों में रहकर भी रीति–रिवाज, तीज त्यौहार उत्साह उमंग से मनातें है।

राजनीति प्ररिपेक्ष्य में इस जिलें की माटी नें चंद्रशेखर आजाद जैसे बलिदानी सपूत दिए है। माता बलेश्वर दयाल जैसे समाज सुधारक हुए है, जिन्होने आदिवासी समाज में आजादी व क्रांति के सही मायने समझाए और उन्हें समाज की मुख्य की धारा मे लाने का प्रयास किए । आदिवासी झब्बू नायक ने भी देश की आजादी में अपनी हिस्सेदारी दर्ज की । ऐसे कई क्रांतिकारियों के योगदान को नही भुला सकतें , जिन्होने अपनें जंगल और जमीन को बचानें में जीवन होम कर दिया।

आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो प्रकृति आश्रयी भील जनजाति को अभी प्रगति का लक्ष्य दूर ही दिखाई देता है । कृषि, शिकार वनोपज, संग्रह मुख्य व्यवसाय होने के साथ मजदूरी के लिए बाहर जाना भी इनमे कर्म क्षेत्र का अंग है। शिक्षा का स्तर बढा है। कई विकास योजनाओं के चलतें उन्नति के अवसर खुले है। नौकरियों में, व्यवसाय में अपनी पैठ

बनानें वालें आदिवासियों के पास आज वाहन, मोबाइल का प्रवेश हो गया है। वे वेश्यिक और देश जगत से जुडने का मादा रखनें लगे है। आगे बढनें की ललक अब विकास की राह पकडनें लगी है । गति व प्रतिशत भले ही कम हो, लेकिन अंधेरे को दूर करने की कंदिले अपनी धीमी लौ में ही सही, उजाले की राह प्रशस्त कर रही है।

संदर्भ सूची

1.झाबुआ रियासत का राजनीतिक प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (1857–1947) (डॉ. के के त्रिवेदी)
2. आदिवासियों के त्यौहार– रामशंकर चंचल
3. आदिवासी दर्पण, झाबुआ
4. मेमोयर्स – माल्कमकृत
5. डॉ. इन्द्र देव जनजातियो में शिक्षा का प्रचार प्रसार हिन्दुस्तान टाईम्स नई दिल्ली 1990

श्रीमती अंजना दुबे
रिसर्च स्कालर, हिन्दी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर म.प्र.